IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान की संभावनाएँ: एक अध्ययन

रश्मि बाजपेयी
शोध छात्रा,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कॉलेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांश

राष्ट्र–राज्य की आधुनिक अवधारणा आन्तरिक सुरक्षा की मजबूत नींव के बिना सम्भव नहीं है। भारत में आन्तरिक सुरक्षा के विविध आयाम हैं और ये आयाम, नागरिकों के बीच व्याप्त गहरी 'असुरक्षा' की भावनाओं से प्रभावित हुई है। भारत में आन्तरिक सुरक्षा के अवलोकन में राष्ट्र के समक्ष कई चुनौतियों प्रमुखता से सामने आती हैं जिसमें, आर्थिक सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, साम्प्रदायिक हिंसा, नक्सलवाद, सशस्त्र विद्रोह, आपराधिक न्याय प्रणाली, जम्मू–कश्मीर और उत्तर–पूर्व में आतंकवाद आदि हैं। भारत की आन्तरिक सुरक्षा के सामने उभरती चुनौतियों के आलोक में यह शोधपत्र मौजूदा कार्य की गम्भीरता, किये जा रहे प्रयासों का अध्ययन करने का प्रयास करता है और भारतीय नागरिकों के बीच व्याप्त असुरक्षा की भावना को दूर करने के लिए सम्भावित प्रतिक्रियाओं को सामने रखता है।

मुख्य शब्द

आन्तरिक सुरक्षा, साम्प्रदायिक हिंसा, असुरक्षा, नक्सलवाद, आतंकवाद।

प्रस्तावना

भारत के समक्ष, जहाँ एक ओर वैविध्यपूर्ण जनसंख्या, विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र और जटिलतापूर्ण सामाजिक–राजनीतिक ताना–बाना है, तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे पर भी कई चुनौतियों का सामना है। किसी राष्ट्र को पारंपरिक और उभरते दोनों खतरों से सुरक्षित रखने के लिए बहुआयामी गतिशीलता की व्यापक दृष्टि अनिवार्य है। भारत में आंतरिक सुरक्षा का वातावरण पेचीदा और चुनौतीपूर्ण है। इस पर बाहरी और घरेलू वातावरण का प्रभाव पड़ता है। ऐतिहासिक कारक भी आंतरिक सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। जिनमें विभाजन से जुड़ी समस्याओं की भी भूमिका रही। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत सशक्त हुआ है और आज राष्ट्रीय और वैश्विक मामलों में एक प्रमुख खिलाड़ी बनने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय सुरक्षा की समग्र अवधारणा में, आंतरिक सुरक्षा देश के समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा परिवेश का एक अभिन्न अंग है। हालाँकि देश को विश्वास है कि जटिलता के बावजूद, इन चुनौतियों को ठोस नीतियों और संस्थागत क्षमता के संयोजन के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है।

किसी देश के एक निश्चित क्षेत्र के अन्तर्गत कानून–व्यवस्था एवं शांति बनाये रखना आन्तरिक सुरक्षा कहलाता है। भारत की भूबद्ध उत्तरी सीमा और दक्षिणी समुद्री सीमा की सुरक्षा का आन्तरिक सुरक्षा के तहत आती है। आन्तरिक सुरक्षा कि जिम्मेदारी पुलिस, अर्धसैनिक बल, आदि पर होती है, यद्यपि गम्भीर परिस्थितियों में सेना का भी प्रयोग किया जाता है।

आन्तरिक सुरक्षा को समझने के लिए आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा दोनों को सपष्ट करने की आवश्यकता है। आन्तरिक सुरक्षा के अन्तर्गत एक निश्चित क्षेत्र की सुरक्षा, शांति एवं व्यवस्था, आन्तरिक क्षेत्र की सम्प्रभुता, पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों के कार्यक्षेत्र, आते हैं जबकि, वाह्य सुरक्षा के अन्तर्गत बाह्य क्षेत्र की सम्प्रभुता, सेना के एक प्रमुख कार्य के रूप में आक्रामकता के विरुद्ध सुरक्षा आदि आते हैं।

आचार्य कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में प्रमुखतः चार प्रकार के खतरों का वर्णन किया है।

1. आन्तरिक खतरे
2. बाह्य खतरे
3. आन्तरिक रूप से सहायता प्राप्त बाह्य खतरे
4. बाह्य सहायता प्राप्त आन्तरिक खतरे

आन्तरिक सुरक्षा का महत्त्व

1. क्षेत्रीय अखंडता एवं आन्तरिक सम्प्रभुता की रक्षा के लिए
2. घरेलू शान्ति कि स्थापना हेतु
3. कानून व्यवस्था निर्माण हेतु
4. संविधान के समक्ष समानता का भाव विकसित करने हेतु
5. भय से दूर करने हेतु

भारत की आंतरिक सुरक्षा के समक्ष अग्रलिखित चुनौतियाँ प्रतिदर्श हैं –

जम्मू–कश्मीर में अस्थिरताः

यह समस्या आजादी के बाद से ही हमारे साथ रही है। तत्कालीन रियासत के शासक महाराजा हरि सिंह द्वारा हस्ताक्षरित विलय की वैधता पर विवाद करता रहा है। भारत के साथ प्रत्यक्ष युद्धों में वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका है। इसलिए, उसने 1989 से एक छद्म युद्ध शुरू कर दिया है। दुर्भाग्य से, राज्य और प्रशासनिक प्रणालियों की कमजोरियों ने पाकिस्तान को अशांत जल में मछली पकड़ने के अवसर प्रदान किए। राज्य पर शासन करने के बजाय अपने शासन को कायम रखने में अधिक रुचि रखने वाले इसके शासकों ने क्षेत्रीय और धार्मिक मतभेदों का फायदा उठाया। इस माहौल में राष्ट्र–विरोधी ताकतें पनपीं और पाकिस्तान ने उन्हें समर्थन और प्रोत्साहन देने का कोई मौका नहीं छोड़ा। ऐसे राज्य में, जहां विभाजन के समय भारी आबादी सांप्रदायिक राजनीति के खिलाफ थी, कट्टरपंथी ताकतें धर्मनिरपेक्ष राजनीति में घुसने में कामयाब रही हैं। हालाँकि, केंद्र सरकार द्वारा 5 अगस्त 2019 को धारा 370 हटाने के बाद से परिस्थितियों में तेजी से परिवर्तन हुआ है।

जम्मू और कश्मीर में विप्लव

वर्ष	टातंकवादी घटनाओं की संख्या	नगरिक हताहतों की संख्या	हताहत हुए सुरक्षा बल कर्मियों की संख्या	मारे गए आतंकवादियों की संख्या
2014	222	28	47	110
2015	208	17	39	108
2016	322	15	82	150
2017	342	40	80	213
2018	614	38	91	257

श्रोत – पी.आई.बी., 5 फरवरी, 2019

क्षेत्रवाद और अंतर्राज्यीय विवादः

धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक कारणों से स्वयं के अलग अस्तित्व की जागृत भावना क्षेत्रवाद को जन्म देती है। स्वतंत्रता पश्चात 1948 में धर आयोग और जे.वी.पी. समिति की सिफारिशों के आधार पर भाषा को आधार मानते हुए राज्यों का पुनर्गठन हुआ। कई बार अलग–अलग राजनीतिक पार्टियों द्वारा धर्म का राजनीतिकरण किया जाता है जो कि, देश की क्षेत्रीय अखंडता एवं सम्प्रभुता हेतु एक खतरे के रूप देखा जाता है। इसके अतिरिक्त आर्थिक असंतुलन, राजनीतिक नफा–नुकसान के संदर्भ में निर्णय लिया जाना या निर्णयों को उस संदर्भ में देखा जाना जैसे 1968 में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग व नक्सलवादी क्षेत्रों में विद्रोह से चिंतित होकर प्रभावित क्षेत्र में हथियार रखने पर प्रतिबंध लगाया, जिसे राज्य सरकारों ने हस्तक्षेप के रूप में देखा।

विभिन्न कारणों से दो या अधिक राज्यों के मध्य विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिससे आन्तरिक सुरक्षा प्रभावित होती है, इसमें अंतराज्यीय जल विवाद को आसानी से चिन्हित किया जा सकता है। इसमें प्रमुख रूप से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के मध्य रावी–व्यास का जल विवाद, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के मध्य नर्मदा नदी जल विवाद, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश के मध्य गोदावरी नदी जल विवाद, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र के मध्य कृष्णा नदी जल विवाद, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और पुडुचेरी के मध्य कावेरी जल विवाद इत्यादि प्रमुख हैं।

आतंकवाद और विद्रोहः

भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे गम्भीर चुनौतियों में से एक आतंकवाद और विद्रोह का खतरा है। भारत दीर्घ अवधि से सीमा पार से होने वाली आतंकवादी गतिविधियों का सामना करता रहा है, 2008 के मुम्बई हमले और जम्मू–कश्मीर में चल रहे विद्रोह जैसी घटनाओं से लगातार खतरे पैदा हो रहे हैं। प्रभावी खुफिया जानकारी साझा करना सुनिश्चित करना, सीमा सुरक्षा को मजबूत करना और आतंकवाद विरोधी उपायों को बढ़ाना इस खतरे से निपटने में महत्वपूर्ण है।

नक्सलवाद और वामपंथी उग्रवादः

भारत का हृदय स्थल नक्सलवाद और वामपंथी उग्रवाद की लगातार चुनौती से जूझ रहा है। ये आंदोलन, मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, झारखंड और ओडिशा जैसे राज्यों में प्रचलित हैं, इन क्षेत्रों के सामाजिक ताने–बाने और आर्थिक विकास के लिए खतरा हैं। इन आंदोलनों के मूल कारणों, जैसे सामाज एवं उसमें व्याप्त आर्थिक असमानता और शासन से जुड़े मुद्दे जो आमजन को सीधे तौर पर प्रभावित करते हैं, को संबोधित करना, एक स्थायी समाधान के लिए आवश्यक है।

वामपंथी उग्रवाद				
वर्ष	आतंकवादी घटनाओं की संख्या	नागरिक हताहतों की संख्या	हताहत हुए सुरक्षा बल कर्मियों की संख्या	मारे गए आतंकवादियों की संख्या
2014	222	28	47	110
2015	208	17	39	108
2016	322	15	82	150
2017	342	40	80	213
2018	614	38	91	257
2019	670		52	
2020	665		43	
2021	509		50	2021

श्रोत – पी.आई.बी., 5 फरवरी, 2019 और 21 दिसम्बर 2022

सांप्रदायिक हिंसा और सामाजिक अशांतिः

भारत का विविधतापूर्ण समाज अक्सर सांप्रदायिक तनाव और सामाजिक अशांति का अनुभव करता है, जो आंतरिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करता है। राजनीतिक एजेंडा या सामाजिक विभाजन से प्रेरित धार्मिक और जातीय संघर्ष तेजी से बढ़ सकते हैं और शांति को बाधित कर सकते हैं। सांप्रदायिक हिंसा को रोकने और सामाजिक एकता बनाए रखने के लिए अंतर–धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देना, कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सशक्त बनाना और शीघ्र न्याय सुनिश्चित करना आवश्यक है।

साइबर सुरक्षा खतरेः

भारत में तेजी से डिजिटलीकरण के साथ ही इससे जुड़े साइबर सुरक्षा खतरे भी आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती साबित हो रहे हैं। महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे, वित्तीय प्रणालियों और सरकारी नेटवर्क को लक्षित करने वाले साइबर हमलों के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। भारत के डिजिटल परिदृश्य की सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा बुनियादी ढाँचे को बढ़ाना, नागरिकों के बीच जागरूकता बढ़ाना और सार्वजनिक–निजी भागीदारी को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सीमा प्रबंधनः

भारत की सीमाएँ कई देशों के साथ लगती हैं, जिससे प्रभावी सीमा प्रबंधन एक जटिल कार्य बन गया है। घुसपैठ, तस्करी और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध जैसी चुनौतियों के लिए मजबूत निगरानी तंत्र, तकनीकी प्रगति और अंतर्राष्ट्रीय सामंजस्य की आवश्यकता है। सीमा बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, खुफिया जानकारी साझा करना और सीमा नियंत्रण प्रणालियों का आधुनिकीकरण भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण कदम हैं।

कट्टरवाद और उग्रवादः

ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से कट्टरपंथ और उग्रवाद का बढ़ना भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक जटिल चुनौती है। चरमपंथी विचारधाराओं द्वारा कमजोर व्यक्तियों को प्रेरित करना राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ ही साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए भी खतरा है। इस खतरे को कम करने के लिए सामुदायिक भागीदारी, युवा सशक्तीकरण और प्रभावी कट्टरपंथ कार्यक्रमों के माध्यम से कट्टरपंथ का मुकाबला करना आवश्यक है।

गैरकानूनी इमिग्रेशनः

भारत में, विशेषतः सीमावर्ती क्षेत्रों में अवैध आप्रवासन भी एक बड़ी समस्या रही है। प्रवासियों की बड़े पैमाने पर आमद संसाधनों पर दबाव डाल सकती है, सामाजिक संतुलन को बाधित कर सकती है और संभावित रूप से आपराधिक गतिविधियों को कवर प्रदान कर सकती है। सीमा सुरक्षा को बढ़ाना, मजबूत पहचान प्रणाली विकसित करना और अवैध आप्रवासन को प्रेरित करने वाले मूल कारणों को संबोधित करना इस चुनौती को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण है।

बाह्य सुरक्षा वातावरण का आन्तरिक सुरक्षा पर प्रभावः

बाह्य सुरक्षा वातावरण परिवर्तनशील होते हैं, इससे भी भारत की आंतरिक सुरक्षा प्रभावित होती है। बाहरी कारक आमतौर पर भारत के नियंत्रण में नहीं होते। हमें बेहतर खुफिया जानकारी, बेहतर क्षमताओं और केंद्रित अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से उनसे निपटना होगा। कुछ उदाहरणः

- सीमा पार आतंकवाद, कट्टरपंथ
- अवैध प्रवासन और शरणार्थी (जैसे श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार आदि)
- ड्रग्स और हथियारों की तस्करी (अफगानिस्तान)
- साइबर स्पेस (डार्क नेट)
- खुले समुद्र में अवैध गतिविधियाँ– प्रसार, मछली पकड़ना।
- पड़ोस में अस्थिरता (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, म्यांमार आदि)।

शासन स्तर से प्रयासः

विगत वर्षों में सरकारों ने आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों से निपटने पर काफी ध्यान दिया है। उदाहरणस्वरूप, 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों के पश्चात् सरकार का ध्यान काफी बढ़ा, एनआईए का गठन किया गया जो आतंकवाद की जाँच के लिए भारत सरकार की अग्रणी संघीय एजेंसी के रूप में उभरी है। अनुच्छेद 370 का उन्मूलन जम्मू–कश्मीर में एक ऐतिहासिक घटनाक्रम रहा इससे यहाँ युवाओं हेतु अवसर पैदा हुए जिनके आतंकवाद की घटनाएँ न्यूनतमम हो गई हैं। विद्रोहियों से लड़ने, विकास पर ध्यान केंद्रित करने, विद्रोही समूहों के साथ समझौते तक पहुंचने और कुशल कूटनीति के उद्देश्य से विवेकपूर्ण नीतियों के संयोजन से, सरकार पूर्वोत्तर में उग्रवाद को नियंत्रण में लाने और विकास के एक नए युग की शुरुआत करने में सक्षम रही है। पूर्वोत्तर बहुआयामी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। उग्रवाद से निपटने के लिए एक सुविचारित रणनीति, बेहतर समन्वय, विकास पर ध्यान, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की क्षमताओं के निर्माण से वामपंथी उग्रवाद से निपटने में सकारात्मक परिणाम मिले हैं।

समुद्री सुरक्षा और विशेष रूप से तटीय सुरक्षा पर हाल के वर्षों में बहुत ध्यान दिया गया है। मछुआरों और उनकी आजीविका में सुधार, तटीय पुलिस को मजबूत करने, अंतरराज्यीय समन्वय को मजबूत करने, भारतीय तट रक्षक की क्षमताओं में सुधार करने और तटीय निगरानी को मजबूत करने पर ध्यान दिया गया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आतंक का मुकाबला करने के लिए सुरक्षा और कानून–प्रवर्तन एजेंसियों की सहायता के लिए एक आईटी मंच के रूप में नेशनल इंटेलिजेंस ग्रिड (NATGRID) बनाया गया। आतंकी गतिविधियों पर नजर रखने और राष्ट्रीय सुरक्षा हितों की सुरक्षा हेतु NATGRID, रेलवे, पुलिस, चोरी के वाहन, आव्रजन, एयरलाइन, पासपोर्ट, वाहन स्वामित्व, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन डेटा और वगैरह सहित कई डेटाबेस को लिंक करेगा।

निष्कर्षः

भारत का आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य जटिल और बहुआयामी है, जिसमें उभरते खतरों से निपटने के लिए निरंतर सतर्कता और सक्रिय उपायों की आवश्यकता है। आतंकवाद, उग्रवाद, सांप्रदायिक हिंसा, साइबर खतरों, सीमा प्रबंधन, कट्टरपंथ और अवैध आप्रवासन सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु खुफिया जानकारी साझा करने, तकनीकी प्रगति, सामाजिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से जुड़े एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इन चुनौतियों को प्राथमिकता देकर और व्यावहारिक समाधान लागू करके, भारत अपने नागरिकों के लिए अधिक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की दिशा में प्रयास कर सकता है।

सन्दर्भ

1. भट, पी.एन.एम. (2007), इंडियाज इन्टरनल सिक्यूरिटीरू एनुअल रिव्यू 2006। लांसर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
2. जोशी, एम. (2019), इंडियाज इन्टरनल सिक्यूरिटीरू अ कम्पेरेटिव रिव्यू, ऑक्सफोर्ड, युनिवर्सिटी प्रेस।
3. सिंह, जी. (2018), इंडियाज एक्सटर्नल इंटेलिजेंसः सीक्रेट्स ऑफ रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ), मानस प्रकाशन
4. राघवन, वी.आर. (2017), इंडियाज वारः द मेकिंग ऑफ मॉडर्न साऊथ एशिया, 1939–1945, पेंगुइन बुक्स
5. पुरी, एच.के. (2016), इंडियाज नेशनल सिक्यूरिटीः एनुअल रिव्यू 2015, लांसर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
6. सुब्रमण्यम, के. (2019), इंडियाज सिक्यूरिटी सिक्यूरिटी चौलेंजेज, सेज पब्लिकेशन
7. पंत, एच. वी. (2013), इंडियाज एक्सटर्नल सिक्यूरिटीः रियलपोलीटिक इन अ न्यूक्लियर–आर्म्डवर्ल्ड, :टलेज
8. हुडा, डी.एस. (2020), इंडियाज नेशनल सिक्यूरिटीः एनुअल रिव्यू 2019, लांसर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
9. नैय्यर, डी. (2018), क्वेलिंग द रिबेलियनः अ स्टडी ऑफ इंडियाज इन्टरनल सिक्यूरिटी, हार्पर कॉलिन्स इंडिया